भंडारण के समय दालों में लगनें वाला प्रमुख घुन कीट एवं उनका प्रबंधन

कृषि कुंभ (मई 2023),
खण्ड 02 भाग 12, पृष्ठ संख्या 08–10

भंडारण के समय दालों में लगनें वाला प्रमुख घुन कीट एवं उनका प्रबंधन

रवि कुमार रजक[1] एवं ओम नारायण[2]
[1]शोध छात्र, कृषि कीट विज्ञान विभाग
[2]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय, कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश–224229, भारत।
Email: ravikumarrajak0106@gmail.com

कीट का अन्य नाम

धानुर, डोरा, चिरइया आदि।

कीटों का वैज्ञानिक नाम

पूरे भारत में इस कीट की तीन जातियां पाई जाती हैं

1– कैलोसोब्रुकस चिनेंसिस सी

2– कैलोसोब्रुकस एनालिस

3– कैलोसोब्रुकस मेकूलेटस

कीटों का गण–

कोलियोप्टेरा

कीटों का परिवार–

लैरिडाक

पोषक पौधे–

अरहर, मूंग, मटर, उड़द, मसूर, लोबिया एवं सेम आदि

वितरण–

यह कीट भारत के अतिरिक्त जापान, अमेरिका, इटली, नाइजीरिया, चीन में पाया जाता हैं यह कीट सबसे पहले 1758 ई. में चीन में पाया गया था उसी के आधार पर इसकी जाति का नाम चाइनेनसिस रख दिया गया हैं। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में यह पाया जाता है।

कीट के द्वारा की गई क्षति एवं महात्व–

इस कीट का प्रकोप खेत एवं भण्डार गृहों दोनो जगह पर होता है यह कीट भण्डार गृहों में ज्यादा नुकसान पहुंचाते है इस कीट के ग्रब एवं प्रौढ़ दोनो ही नुकसान पहुंचाते है दोनो के ही काटने तथा चबाने वाले मुखांग होते है। परन्तु अधिक क्षति ग्रब के द्वारा होती है। इस कीट का प्रकोप खेतों में फरवरी के मध्य माह से ही चालू हो जाता है जिस समय पौधों में हरी फलियॉ लगने लगती है। इस कीट की मादा हरी फलियों पर अपनें अण्डे देती है। यह कीट अण्डों से निकलने के बाद ग्रब फलियों में छिद्र करके अन्दर घुस जाता है और दानों को खा जाता है और दाने के अन्दर ग्रब जिस जगह से जाता है वह जगह बंन्द हो जाता है तथा दाना बाहर से स्वस्थ दिखाई देता है इस तरह से ग्रसित दाने के साथ कीट भण्डार ग्रह में पहुॅच जाता है और कुछ समय में यहॉ से पौढ बनकर बाहर निकलता है और वह प्रजनन कार्य शुरू कर देता है। यह कीट भण्डार ग्रह के दीवारों में फटीं दरारों और बोरों आदि में छिपा रहता है और जिस समय दालें भण्डार ग्रहों में रक्खी जाती है तो इस कीट की मादा दालों के दानों पर चिपक कर अपने अण्डे देती हैं और इसके अण्डे दानों की सतह पर चिपके हुए बहुत आसानी से देखे जा सकते हैं एवं अण्डे से निकलने के बाद ग्रब दानों के अन्दर

प्रवेश कर जातें है तथा अन्दर ही अन्दर पूरा दाना खोखला कर देते हैं और बड़े के अन्दर इस कीट के कई ग्रब देखे गये है। यह ग्रब दानों के अन्दर ही कृमिकोष अवस्था में बदल जाते है। और बाद में इस कीट के प्रौढ एक गोल छेद बनाकर दानों से बाहर निकल आतें है। और इस कीट के द्वारा ग्रसित किये गये दाने न तो खाने के योग्य रहते है और न ही बुबाई के योग्य रहते है। परन्तु वैसे तो यह कीट पूरे साल भर सक्रिय रहता है लेकिन अधिक क्षति मध्य जुलाई से सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में करता है और इस कीट के द्वारा होने वाली हानि का अनुमान 40–50 प्रतिशत तक देखा गया है।

घुन कीट के जीवन का इतिहास –

इस कीट के पूरे जीवन चक्र में चार अवस्थाऍ पाई जाती है। जैसे– अण्डा, ग्रब, कृमिकोष एवं प्रौढ आदि ।

घुन कीट का अण्डा–

इस कीट की मादा खेतों में हरी पत्तियों के उपर एवं भण्डारण ग्रह में दाल के दानों के उपर अपने अण्डे देती है। और यह सभी दानों पर एक–एक करके अण्डे देती है। परन्तु कुछ दानो पर कई अण्डे देखे जाते है। अण्डे देने के पश्चात् मादा कीट अण्डों के उपर चिपचिपा पदार्थ डालकर उनको दानों से चिपका देती है। प्रत्येक अण्डा सफेद रंग का चिकना एवं चमकदार होता है। जो कि बाद में मटमैले एवं सफेद और कुछ हल्के पीले रंग में बदल जाता है।

अनुकूल वातावरण में इसके अण्डे 4–5 दिनों के अंदर फूट जाते है। और ग्रव निकल आने के बाद अण्डों का खोल दानों की उपरी सतह से चिपका रहता है। घुन की एक मादा कीट अपने पूरे जीवन काल में 64–100 अण्डे तक देती है।

घुन कीट का ग्रब–

इस कीट के ग्रब अण्डों से निकलने के बाद दाने के अन्दर घुस जाते है। तथा पूरा जीवन उसी के अन्दर रहते है। इस कीट का शरीर सफेद कोमल बेलनाकार एवं कुछ सिकुड़ा हुआ होता है। इस कीट के शरीर पर तीन जोड़ी पैर पाए जाते है और प्रत्येक पैर के सिरे पर एक नखर होता है। इस कीट का पूर्ण विकसित ग्रब लगभग पॉच मी. मीटर बड़ा होता है। और यह चार बार त्वचा निर्मोचन करता है एवं 2–3 सप्ताह में पूरा बिकसित हो जाता है एवं इस प्रकिया के पूर्ण होने के बाद यह कीट प्युपा अवस्था में बदल जाता है।

घुन कीट का कृमिकोष–

इस कीट की कृमिकोष अवस्था दानों के अन्दर ही होती है। यह भूरे रंग का होता है अनुकूल मौषम में यह अवस्था चार दिन की होती है परन्तु शीतकाल में अधिक समय तक कोषावस्था में रहता है जो कि बढ़कर 4–5 सप्ताह तक का हो जाता है इसके बाद प्रौढ़ कीट बाहर निकलता है।

प्रौढ़ कीट–

इस कीट का प्रौढ लगभग 3.2 से 3.3 मी. मीटर लम्बा होता है इस कीट का रंग भूरा एवं आगे की ओर नुकीला और पीछे की ओर चौड़ा होता है इसकी मादा कीट की एण्टिनी श्रृंगाकार तथा नर कीट की एण्टिनी कंघाकार होती है। इस कीट के वक्ष पर एक छोटा सा सफेद कलर का दाग होता है। इस कीट में दो जोड़ी पॅख भी होते है एवं जिसमें अगले जोड़ी पंख सख्त और पिछले जोड़ी पंख झिल्लीदार होते है। और वे अगले जोड़ी उदर को पूरा नहीं ढक पाते है। कृमिकोष से निकलने के बाद नर और मादा कीट दोनो मैथून क्रिया करते है और मादा 3–4 दिन बाद अण्डे देना चालू करती है। और लगभग एक सप्ताह तक अण्डे देती है। और इसकी मादा लगभग 15 दिन तक जीवित रहती

है और इस कीट का पूरा जीवन चक्र लगभग 25–28 दिनों में पूरा हो जाता है। और इस कीट की एक साल में लगभग 7–8 पीढ़ियॉ देखी गई है।

गोदामों में लगने वाले हानिकारक कीटों की रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

गोदामों की सफाई –

- ❖ जहॉ तक सम्भव हो गोदाम पक्का होना चाहिए।
- ❖ भण्डारण ग्रह की दीवारों में नमि नही होना चाहिए।
- ❖ भण्डारण ग्रह के अन्दर स्वच्छ वायू जाने के लिए बाहर से खिड़कीयॉ होना चाहिए।
- ❖ गोदामों की सारी दरारें छेद आदि सीमेन्ट से भर देना चाहिए ताकि उनके अन्दर कीट शरण न ले सके।
- ❖ पुराने गोदामों की सफाई के बाद ही उनमे नया अनाज भण्डारण करना चाहिए।
- ❖ गेदामों के आसपास का कचड़ा जला देना चाहिए।
- ❖ यदि गोदामों की छत, फर्श अथवा दीवारें फटी हो तो उन पर दवा का छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ नीम की पत्तियों का रस निकाल कर भण्डारण ग्रह में छिडकाव करना चाहिए।
- ❖ नीम की पत्तियों को सुखाकर अनाज के साथ भण्डारण करते समय रखना चाहिए।
- ❖ ई. डी. सी. टी. मिश्रण से 24 घण्टे तक 10 लीटर प्रति 40 घन मीटर स्थान की दर से धूम्रण करना चाहिए।
- ❖ एल्यूमीनियम फॉस्फाइड की 7 गोलियॉ 21 ग्राम प्रति 81 घनमीटर स्थान की दर से प्रयोग करना चाहिए ।

गोदामो में बोरो की सफाई–

- ❖ जहॉ तक संभव हो नये बोरों का प्रयोग करना चाहिए।
- ❖ अगर पुराने बोरे उपयोग में लाना है तो उन्हें उबलते हुए पानी में 15 मिनट तक डुबाना चाहिए।
- ❖ बोरों को पलटकर गमिर्यों की तेज धूप में कम से कम 6 घण्टे तक सुखाने से सारे कीट मर जाते है।
- ❖ बोरों को नीम को घोल में डुबाकर सुखाना चाहिए।
- ❖ बोरों को तम्बाकू को घोल में डुबाकर सुखाना चाहिए।
- ❖ ई. डी. सी. टी. मिश्रण के एक लीटर घोल में 10 खाली बोरों को धूम्रत कर लेना चाहिए।

अनाज की सफाई तथा सावधानियॉ –

- ❖ अनाज लाने वाली गाड़ियों को अनाज ढोने के पहले अच्छी प्रकार से फिनाइल से साफ कर लेना चाहिए।
- ❖ अनाज को खलियान से लाकर कड़ी धूप में अच्छी प्रकार सुखा ले ताकि उसमें नमी 8–10 प्रतिशत से ज्यादा न रहने पाये।
- ❖ भण्डारण से पहले अनाज को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए।
- ❖ अगर संभव हो सके तो एक गोदाम में एक ही प्रकार का अनाज भण्डारित करना चाहिए।
- ❖ अगर अनाज को बोरियों में भरकर रखना है तो नीचे पर्याप्त मात्रा में भूसे की एक परत बिछा लेना चाहिए।
- ❖ यदि अनाज में पहले से ही आक्रमण हो गया है तो उसे भण्डारण करने से पहले अच्छी तरह से उपचारित कर लेना चाहिए।
- ❖ यदि अनाज को 100:1 के अनुपात में नीम सीड करनेल पाउडर के साथ मिलाकर रखें तो कीटों का आक्रमण गोदामों में नही होगा।